

मिषिका (von मिषि) f. *Nardostachys Jatamansi* Dec. ÇABDAR. im ÇKDR.

मिष्ट adj. *schmackhaft, lecker*; n. ein leckeres Gericht, Leckerbissen:

मिष्टः पशुशु मधुरमसो ऽसं पच्यते रसः ÇARŅĀ. SĀMĀ. 1, 2, 13. सो ऽहं वाग-
प्रमिष्टानां (मृष्टानां ed. Bomb.) रसानामवलोककः MBH. 13, 2173. कृद्यै-
र्मिष्टैर्हितैस्तथा (घ्ननपानैः) SUÇR. 1, 117, 3. °भोजन KATHĀS. 63, 63. VA-
RĀH. BRH. S. 89, 1. 17. पयस् *Wasser* 34, 104. रक्त PAÑĀT. 61, 13. मोदक
PAÑĀT. 1, 3, 47. इच्य 10, 17. घ्ननम् R. 1, 19, 22 (23 GORR.). VARĀH. BRH. S.
71, 14. VP. II, 331. मिष्टं कदन्नं वा BHĀG. P. 5, 9, 9. मिष्टान्न HALĀJ. 2, 166.
MBH. 13, 3223. Spr. 3864. 3224 (मिष्टान्नपाने). KATHĀS. 61, 200. VP. II, 218.
MĀRK. P. 14, 84. PAÑĀT. 2, 4, 31. VERZ. d. Oxf. H. 237, a, No. 568. PAÑĀT.
119, 7. मिष्टाशा *das Verlangen nach einem Leckerbissen* Spr. 4075. °भुञ्
MBH. 3, 8451. घ्नसंविभ्य लुद्राणां या गतिर्मिष्टमन्नताम् 7, 2600. R. GORR.
2, 79, 23. R. in LA. (II) 39, 5. यथा तेजस्विनां सूर्यो मिष्टानाममृतं यथा PAÑ-
ĀT. 1, 1, 70, 6, 52. MĀRK. P. 137, 5. °वाक्य *eine süsse Rede führend* VARĀH.
BRH. S. 104, 24, v. 1. — मिष्ट ist aus मृष्ट (vgl. 1. मर्त् 1, a) entstanden und
wechselt mit diesem in Hdschr. und Ausgg. überaus häufig.

मिष्टकर्तार (मिष्ट + क०) nom. ag. *Bereiter schmackhafter Speisen*:

शीघ्रपानेषु कुशलो मिष्टकर्ता च भोजने MBH. 3, 2749.

मिष्टपाचक (मिष्ट + पा०) adj. *schmackhafte Speisen kochend* Spr. 1787.

मिस्, मिँस्यति NAIGH. 2, 14 unter den Verben der *Bewegung*.

मिसर N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 340, a, 17. — Vgl. मिशर.

मिसरु desgl. ebend. 339, a, 6.

मिसत्रमिष्य m. N. pr. eines Mannes ebend. 296, a, No. 718.

मिसि f. *Anethum Sowa* Roxb. und *Anethum Panmori* Roxb. AK. 2, 4, 5, 17. H. an. 2, 586. MED. S. 7. SUÇR. 2, 222, 5. 223, 1. *Nardostachys Jatamansi* Dec. AK. 2, 4, 2, 23 (मिशी COLEBR. und LOIS.). 4, 22 (मिसी). H. an. MED. = घ्नमोदा H. an. MED. = उशीरी RĀĀN. im ÇKDR. — Vgl. मिशि, मिषि.

1. मिक्, मेँहति DHĀTUP. 23, 23. मेहते (aus metrischen Rücksichten);
मिमिह; अमिनत् VOP. 8, 80. मेह्यति, मेहा KĀR. 6 aus SIDDH. K. zu P. 7, 2, 10. 1) *mingere, seichen* (सेचने DHĀTUP.): मेह्याम्यूर्ध्वस्तिष्ठन् AV. 7, 102, 1. 12, 3, 22. ÇAT. BR. 3, 2, 2, 20. यन्मेहति तद्वर्षति 10, 6, 4, 1. TS. 7, 1, 40, 3. KĀTJ. ÇR. 7, 4, 36. NĪR. 2, 21. अत्यं न मिह् (infln.) वि नयति RV. 1, 64, 6. वर्षं मेहत्तमिव बिभ्यतम् BHĀG. P. 1, 17, 2. कृच्छ्रेणं बद्ध मेहत्तम् SUÇR. 1, 121, 6. मिमेह रक्तं हस्त्यश्वम् (nom.) BHĀTJ. 14, 100. प्रति गो प्रति वातं च प्रजा नश्यति मेहतः (gen. partic.) M. 4, 52. MBH. 12, 7055 (मेहेत). न तु मेहेवदीक्षायावत्र्मगोष्ठांम्बुभस्मसु । न प्रत्ययर्कगोसोमसंध्याम्बुञ्जीद्विजन्मनः ॥ JĀĀN. 1, 134. ये मेहति च पन्थानम् *auf den Weg* MBH. 13, 5030. त्रिस्थानं मेहते यश्च VARĀH. BRH. S. 61, 5. ब्राह्मणानिलगोसूर्यान् मेहेत कदा च न *in der Richtung* von MĀRK. P. 34, 37. — 2) *Samen entlassen*: न खादति न मेहति (= रेतःसेकं मैथुनं कुर्वति Schol.) किं ग्रामे पशवो ऽपरे BHĀG. P. 2, 3, 18. — 3) मिँमिडुं = याञ्जाकर्मन् NAIGH. 3, 19; vgl. u. सम्. — मोठ und मीठुन् s. bes.

— caus. मेहयति *seichen lassen* RV. 10, 102, 5.

— अति MBH. 13, 5979 fehlerhaft für प्रति.

— अमि beharnen: पुरुषं वाभिमिहतः (gen. partic.) JĀĀN. 2, 293. —

Vgl. अमिमिह्य.

— अय seichen: °मेहति BHĀG. P. 5, 3, 32. 34. *harnen auf, seichen in*

der Richtung von (acc.): ध्रुवम् ÇAT. BR. 4, 2, 4, 8. घायो ऽनवमेहनीयाः GOBU. 3, 3, 13. नरो क्तिमव मेहति परेवः RV. 9, 74, 4. गोब्राह्मणार्कमा-
गीस्तु ये ऽवमेहति मानवाः MĀRK. P. 14, 67.

— उप caus. *benetzen*: स उत्तमश्लोकपदाब्जविष्टरं प्रेमाश्रुलेषीरुपमेह-
यन्मुहुः BHĀG. P. 6, 16, 32.

— नि *seichen*: गौर्यत्राधिष्कन्ता न्यमेहत् TS. 2, 2, 8, 2. intens. निमिमि-
हत्यः ÇAT. BR. 9, 1, 3, 29.

— परि *beharnen*: °मीठ PĀR. GRHJ. 3, 7. — Vgl. परिमेह.


— प्र *seichen*: यास्तिष्ठत्यः प्रमेहति यथैवोद्भृद्देशकाः MBH. 8, 1832. प्रमीठ = मूत्रित (*geseicht*) und घन (*compact* u. s. w.) MED. dh. 8. — Vgl. प्रमेह.

— प्रति *harnen gegen* (acc.): प्रतिमेहति ये सूर्यम् MBH. 13, 5979 (अ-
ति° ed. Calc.). 5988. सूर्यं च प्रतिमेहत् 4514. 4578. R. 2, 73, 21 (79, 4 GORR.).

— सम् *hierher ziehen* die Comm. die Form मिमिह्व, wie sie auch die unter 1. मिह् angeführten von मिह् ableiten. सं नो राया मिमिह्वा समिह्वमिह्वा *überschütte uns* RV. 1, 48, 16. Vgl. मिमिडुं unter d. simpl.

2. मिह् (= मिह्) f. *Nebel, Dunst; wässriger Niederschlag*: मिह् व-
सान उप क्षीमडेहेत् RV. 2, 30, 3. मिहं न सूर्यो अति निष्टेत्युः 1, 141, 13. पतसि मिहं स्तनयत्यध्वा 79, 2. वर्षति मृत्तो मिहम् 8, 7, 4. मिहं न वातो वि हं वाति भूमि 10, 31, 9. मिहः प्र तप्ता अयत्तमोसि 73, 5. 4, 32, 13. 38, 7. 3, 31, 20. मिहो नपात् heisst *der Dämon des Nebels* RV. 1, 37, 11. 5, 32, 4.

मिहिका (von 1. मिह्) f. *Nebel, Schnee* AK. 1, 1, 2, 20. H. 1072. HALĀJ. 3, 28. ÇABDAR. im ÇKDR. — Vgl. कार° und महिका.

मिहिरं UNĀDIS. 1, 52. m. 1) =  *die Sonne* AK. 1, 1, 2, 31. TRĪK. 1, 1, 99. H. 97. an. 3, 595. MED. r. 203. HALĀJ. 1, 36. MBH. 3, 191. Spr. 3894. KATHĀS. 29, 199. GĪT. 11, 28. MĀRK. P. 107, 7. BHĀVIŠĪA-P. in Verz. d. Oxf. H. 32, b, 38. — 2) *Greis* MED. ÇABDAR. im ÇKDR. बुद्ध st. वृद्ध H. an. — 3) *Wolke* (von मिह्) H. an. — 4) *Wind*. — 5) *der Mond* RATNAM. im ÇKDR. — 6) N. pr. als Abkürzung für वराहमिहिर Verz. d. Oxf. H. 279, a, 16. — Vgl. पञ्च°.

मिहिरकुल (मि° *die Sonne* + कुल) m. N. pr. eines Fürsten RĀĀ-
TAR. 1, 289; vgl. LĪA. I, 711. Ind. St. 3, 190.

मिहिरदत्त (मि° + दत्) m. N. pr. eines Mannes RĀĀ-TAR. 4, 80.

मिहिरपुर (मि° + पुर) n. N. pr. einer von Mihirakula erbauten
Stadt RĀĀ-TAR. 1, 306.

मिहिररति (मि° + र°) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 122, a, 2.

मिहिराण m. Bein. Çiva's TRĪK. 1, 1, 46. मिहिराण H. ç. 40. — Vgl. मीठुन्.

मिहिरेश्वर (मिहिर + ई°) m. N. eines von Mihirakula erbauten
Heiligthums RĀĀ-TAR. 1, 306.

मिहिलारोप्य n. N. pr. einer Stadt im Süden PAÑĀT. 3, 9, 6, 4. 104.
5. 106, 22. 116, 15. 148, 4. — Vgl. महिलारोप्य.

1. मी s. 2. मा und 2. 3. मि.

2. मी (= 2. मि, मी) adj. in मन्यु°.

मीडम् adv. *leise*: मीडं वा एतथज्ञस्य क्रियते यद्यज्ञुषा क्रियत उच्चैर्ह्य-
चा च साम्रा च क्रियते KĀTJ. 29, 2.

मीठ 1) partic. (von 1. मिह्) *geseicht, beharnt* AK. 3, 2, 46. H. 1495.

— 2) मीठ, मीठ्ठै u. *Kampf, Wettkampf* NAIGH. 2, 17. RV. 1, 100, 11.